बिन वेतन के करें सफाई

बाल कहानी पुस्तिका

बिन वेतन के करें सफाई

संध्या जोशी ✡ रूचि बड़ोला ✡ एस.ए. हुसैन

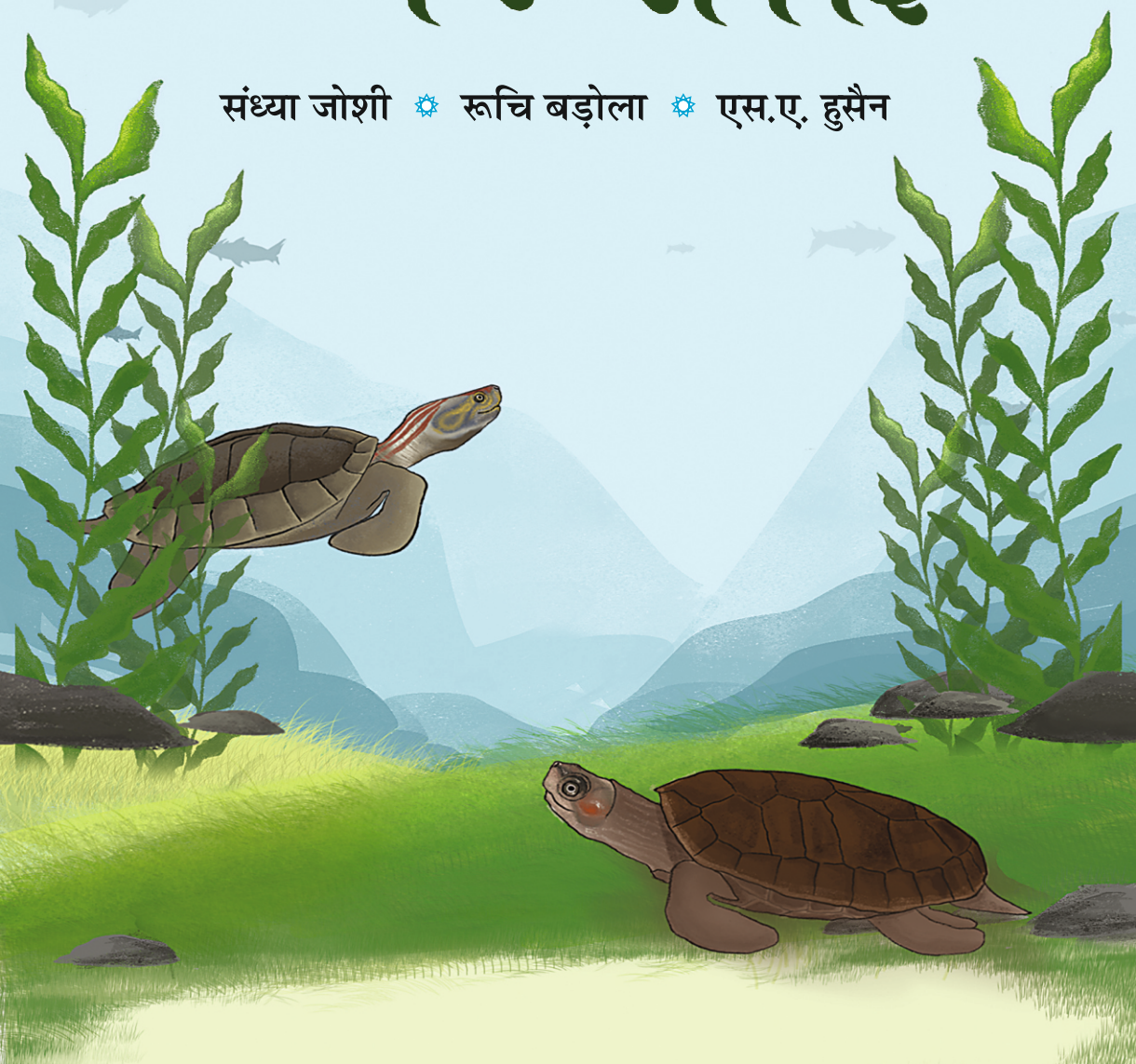

बिन वेतन के करें सफाई

2024

गंगा की स्वच्छता के लिए गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एंव पारिस्थितिकी सेवाओं के रखरखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन

परियोजना अन्वेषक

रुचि बडोला, सैयद एनुल हुसैन

जलीय जीव संरक्षण निगरानी केंद्र भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून

यह पुस्तिका जलशक्ति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के अंतर्गत परियोजना 'गंगा की स्वच्छता के लिए गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एंव पारिस्थितिकी सेवाओं के रखरखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन' द्वारा निर्गत की गई है।

लेखन

संध्या जोशी

रुचि बडोला

एस.ए. हुसैन

प्रारूप

महेश पांडे, ख्याति चौहान

इलस्ट्रेशन

अमन उनियाल

ख्याति चौहान

Google

उद्धरण

डब्लू आइ आई गैकमैक (2023)। 'गंगा की स्वच्छता के लिए गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एंव पारिस्थितिकी सेवाओं के रखरखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन'। गंगा जलीय जीव संरक्षण निगरानी केन्द्र भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून भारत । पी.पी. 34

भारतीय वन्यजीव संस्थान

चन्द्रबनी देहरादून - 248001

उत्तराखंड, भारत

ISBN No. 978-81-978601-7-1

मूल्य: रू0 250.00

अपनी बात

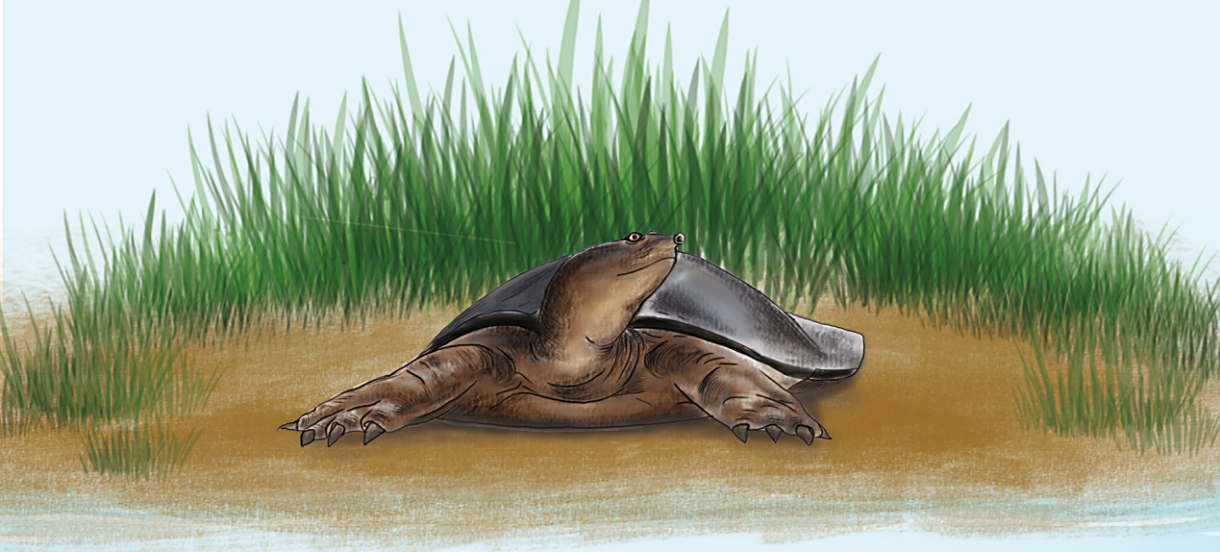

नन्हें बाल गंगा प्रहरी दोस्तों, आज हम आपके लिए लेकर आये हैं, जलीय जीवों पर आधारित बाल कहानी पुस्तिका की सीरीज का प्रथम संस्करण बिन वेतन के करें सफाई। यह पुस्तिका गंगा नदी में पाये जाने वाले कछुओं पर आधारित है। इस बाल कहानी पुस्तिका के माध्यम से गंगा में रहने वाले कछुओं की प्रजातियों के विषय में रोचक तथा मनोरंजक तरीके से कहानी द्वारा महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी गई हैं। कहानी के द्वारा बच्चे जान पायेंगे कि गंगा में रहने वाले कछुए कितने प्रकार के होते हैं, उनका गंगा नदी की स्वच्छता बनाये रखने, जैवविविधता बचाये रखने व स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र को बनाये रखने में क्या योगदान है, वर्तमान में उन पर आने वाले संकट कौन से हैं जिनकी वजह से उनके अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है आदि। हमने कहानी के माध्यम से गंगा नदी में पाये जाने वाले कछुओं के विषय में सम्पूर्ण जानकारी देने की कोशिश की हैं। कहानी के पात्र कछुए ही हैं तथा गंगा में रहने वाले कछुओं के नामों से बच्चों को परिचित करवाने के लिए पात्रों के नाम भी वही रखने की कोशिश की गई है। पुस्तिका के अंत में आप सबका ज्ञान बढ़ाने के लिए गंगा में रहने वाले कछुओं की जानकारी दी

गई है। आशा है कि आप सबको ये बाल कहानी पुस्तिका पसंद आयेगी और आप सब बच्चे एक बाल गंगा प्रहरी के रूप में अपनी-अपनी भूमिका तय करेंगे। आप लोगों को ये पुस्तिका कैसी लगी आपकी प्रतिक्रियाओं का इन्तजार रहेगा। प्रतिक्रिया आप बच्चों के अखबार के माध्यम से दे सकते हैं।

इस बाल पुस्तिका का उद्देश्य बच्चों को गंगा में रहने वाले जलीय जीवों के विषय में जानकारी देना है। बच्चे नदी की जैवविविधता से परिचित हों और पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत बनाये रखने में जलीय जीवों के योगदान तथा उनके अस्तित्व पर आने वाले खतरों के विषय में जागरूक हों, और नदियों के अस्तित्व तथा जलीय जीवों के संरक्षण के लिए भविष्य में एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका समझ सकें। भारतीय वन्यजीव संस्थान एवं राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम के तहत भारतीय वन्यजीव संस्थान की स्कूली बच्चों के लिए बाल गंगा प्रहरी कार्यक्रम की पहल में ये पठन सामग्री बच्चों के ज्ञान वर्धन एवं जागरूकता के लिए एक कड़ी का काम करेगी।

संध्या जोशी
रुचि बडोला
एस.ए. हुसैन

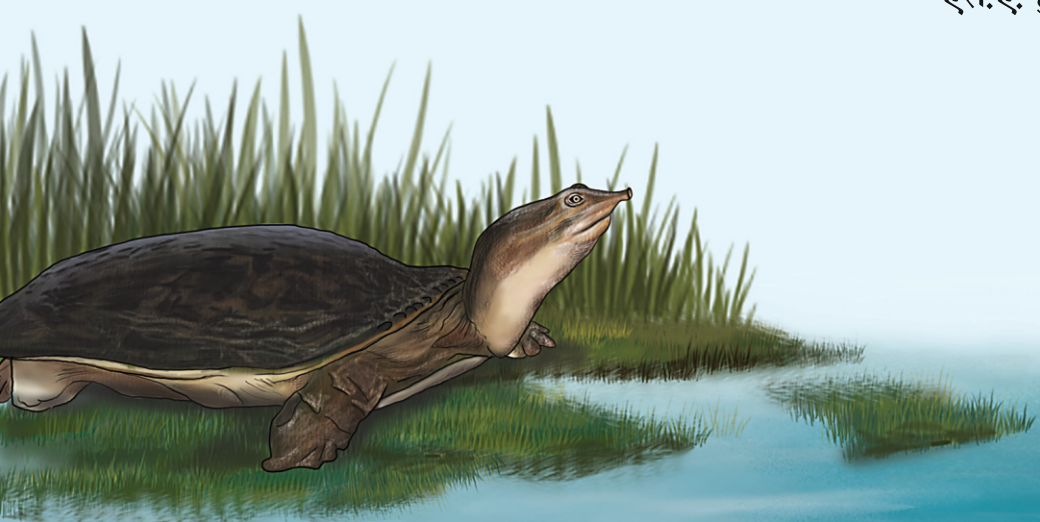

fcu osru djsa lQkbZ

नदियों की हम करें सफाई

नाम हमारा कछुआ भाई

हइया हो हइया, हइया हो हइया

सुन लो ओ भाई, सुन लो ओ बहना

नदियों के संग ही हमने है रहना

हइया हो हइया, हइया हो हइया

स्वच्छता की अब जो बात है आई

आओ मिलकर करें सफाई

प्लास्टिक, पॉलिथीन, अजैविक कचरा

प्रकृति के लिए ये ही तो हैं खतरा

चित्रा– अरे भाई ! आज ये सब क्या हो रहा है। इतनी भीड़ क्यों है ? क्या नदी के किनारे कोई मेला लगा है ? और सब ये गीत क्यूँ गा रहे हैं ? सब कर क्या रहे हैं ये आज ?

ढोंन्डू- अरे मौसी, आपको नहीं पता आज स्वच्छता अभियान है। सारी नदी के कछुआ समुदाय मिलकर आज स्वच्छता अभियान में भागीदारी कर रहे हैं और जो नहीं आयेगा सुना है उस पर जुर्माना लगाया जायेगा।

चित्रा- जुर्माना ? क्या जुर्माना लगा रहे हैं। उससे क्या होगा ?

ढोंन्डू- तुम्हें नहीं पता ? जो स्वच्छता अभियान में भागीदारी नहीं करेगा, उसे हफ्ते में दो दिन अकेले नदी की सफाई करनी होगी और कोई भी उनके साथ सहयोग नहीं करेगा।

चित्रा- ये तो बहुत ही अच्छी बात है। पर सूचना भी तो कोई चीज होती है? सबको सूचना भी तो देनी चाहिये थी, सामुदायिक काम में सबकी भागीदारी होनी चाहिये। अब देखो ना! किसी ने मुझे बताया ही नहीं, वरना मैं आती नहीं क्या? और ये गीत किसने लिखा है? बहुत सुन्दर गीत है।

ढोंन्डू- मौसी ये गीत तो हमारे प्यारे गीतकार भाई धूम कछुए ने लिखा है। ये गीत हमेशा सफाई अभियान में जनगीत की तरह कछुआ समुदाय द्वारा गाया जाता है। चलो मौसी वहीं चलते हैं। आप तो बहुत अनुभवी हो, चलो ना आपके अनुभवों का लाभ सबको मिलना चाहिये।

चित्रा– हाँ–हाँ.. चलो चलो इस हवन में तो सब को आहूति देनी होगी, तभी हमारी गंगा साफ होगी। आज हमने कितना काम किया है। अगर हम कछुआ समुदाय ये काम ना करें, तो पता नहीं गंगा का क्या होगा ?

सुंदरी– आप भी आओ मौसी, सभी कछुआ भाई आपका ही इन्तजार कर रहे हैं आप हो सबसे बुजुर्ग, सबसे अनुभवी।

चित्रा–आज तुम सबको सामुदायिक रूप से काम करते देख कर कितना अच्छा लग रहा है। बच्चों हमारे जमाने में तो सारे गाँव वाले मिलकर काम सामुदायिक रूप से ही किया करते थे.... चाहे किसी की शादी हो, सफाई हो या नदी की चौकीदारी सब ही मिलजुल कर काम किया करते थे। एक परिवार की तरह मिल कर रहते थे, किसी का कोई भी काम होता, तो वो सबकी जिम्मेदारी हो जाता था। कितने अपनेपन की भावना थी। अब तो कोई किसी के काम में भागीदारी नहीं करता सबको लगता है हमें क्या पड़ी है।

कालू चित्ती– मौसी व्यक्तिगत काम तो ठीक हैं, पर सामुदायिक कामों में तो सब एक हो जाते हैं ना..... ?

चित्रा– अरे कहाँ.....सामुदायिकता की भावना अब कहाँ रह गयी है। अब स्वच्छता अभियान को ही ले लो। लोगों को लगता है ये जिम्मेदारी सरकार की है, हम परेशानी क्यों मोल लें।

सुन्दरी– हाँ बहन, अब सब ऐसा ही चाहते हैं, लेकिन हमारे बच्चे बहुत ही समझदार और मेहनती हैं उन्होंने अपने गौरवशाली इतिहास की परम्परा को बरकरार रखा हुआ है।

तिलहारा– अरे, मौसियों ! हम कछुओं ने ही तो नदियों की सफाई की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाई हुई है। अगर हम ना होते तो पता नहीं क्या होता इन नदियों का।

चपन्त– अरे भाइयों, जल्दी–जल्दी सफाई करो। हमें नदी साफ करके अभी बच्चों के खेलने के लिए मैदान भी तो बनाना है, और कल तो वहाँ पर हमारे एक बहुत विद्वान कछुए भाई आने वाले हैं। क्या नाम है उनका ..... ? हाँ मेलानोचेलिस ट्राईजुगा। बड़ा ही कठिन नाम है भाई.....याद ही नहीं होता।

पचौरिया– भाई अंग्रेज हैं क्या ? ऐसे नाम तो अंग्रेजों के ही हुआ करते हैं।

तिलहारा– अरे नहीं–नहीं अपनी गंगा में ही रहते हैं। बस पढ़ाई वढ़ाई जरा फॉरेन में कर लिए हैं। तो नाम बदल लिए हैं।

चित्रा– अरे अपना कालू है वो ! यहाँ तो हम सब उसे कालू ही कहा करते हैं।

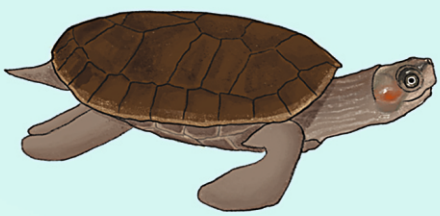

चपन्त- मौसी अब नहीं रह गये है वो तुम्हारे कालू वो अब बहुत विद्वान हो गये हैं। बहुत जानकार, कल वो गंगा के किनारे लैक्चर देने वाले हैं। बहुत कुछ बतायेंगे, कल आना जरूर.....।

अगले दिन .....

तिलहारा- चलो..... सब कहाँ हो ? ? ? चलो नदी के किनारे चलने का समय हो गया है। इससे पहले कि वक्ता आयें हमें वहाँ पहुँच जाना चाहिये।

ढोंन्डू- अरे पचौरिया भईया जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाओ ....ऐसा लगता है, जैसे कछुए और खरगोश की कहानी के कछुए थे ?

पचौरिया- और नहीं तो क्या.... मैं वही कछुआ हूँ और कहानी का अंत तो तुम्हें पता ही होगा कि कौन जीता था। अरे चपन्त भैया, चित्रा मौसी, सुंदरी बुआ चलो सबको बुलाओ। वहाँ चल कर सारे इंतजाम भी तो करने हैं।

चपन्त- अरे चिंता की कोई बात नहीं है, मैंने कल ही सारे काम कर लिए थे। माइक, कुर्सियाँ, कनात और जनरेटर। अब बस लोगों के आने की देर है। कहीं ऐसा ना हो कि लोग ना पहुँच पायें ।

ढोंन्डू- चिंता की कोई बात नहीं है जी ! मैंने कल ही डुग-डुगी पिटवा दी थी। कोई चिंता कोई गम नहीं .....ढोंन्डू किसी से कम नहीं।

तिलहारा– नदी और उसके किनारे की सफाई कल ही हो गयी थी। अब बस मीटिंग अच्छी हो जाये। देखो–देखो नदी के किनारे काफी भीड़ हो गयी है, जल्दी–जल्दी चलो।

पचौरिया – ये तो बताओ एंकरिंग कौन कर रहा है? माइक सम्भालना कोई मजाक की बात नहीं है। मुझे लगता है हम में से सबसे बढ़िया एंकरिंग अपने बाटागुर भैया करते हैं। माइक तो वो ही सम्भालेंगे। चलो जी पहुँच गये! और वॉलिंटियर कहाँ हैं सारे?

बाटागुर– (माइक से) हैलो टेस्टिंग....हैलो–हैलो। सभी उपस्थित कछुआ भाइयों और बहनों कृपया अपना–अपना स्थान ग्रहण कर लें। देखिये शोर होगा तो आप हमारे सम्मानित अतिथि का सम्भाषण नहीं सुन पायेंगे, कृपया शांति बनाये रखें, और माताओं बहनों से अनुरोध है कि छोटे बच्चों को शोर ना मचाने दें, थोड़ी ही देर में हमारे सम्मानित अतिथि आने वाले हैं। आज वो आपको हमारे गौरवशाली इतिहास के विषय में बताने वाले हैं। लीजिये ..... वो आ चुके हैं। उनका स्वागत करतल ध्वनि से करें.....। महोदय, आपका कछुआ समुदाय की इस सभा में हार्दिक स्वागत है। आप कछुआ समुदाय के शिरोमणी हैं। यहाँ पर उपस्थित सभी कछुआ भाई बहन आपके मुख से अमृतवचनों का रसास्वादन करना चाहते हैं।

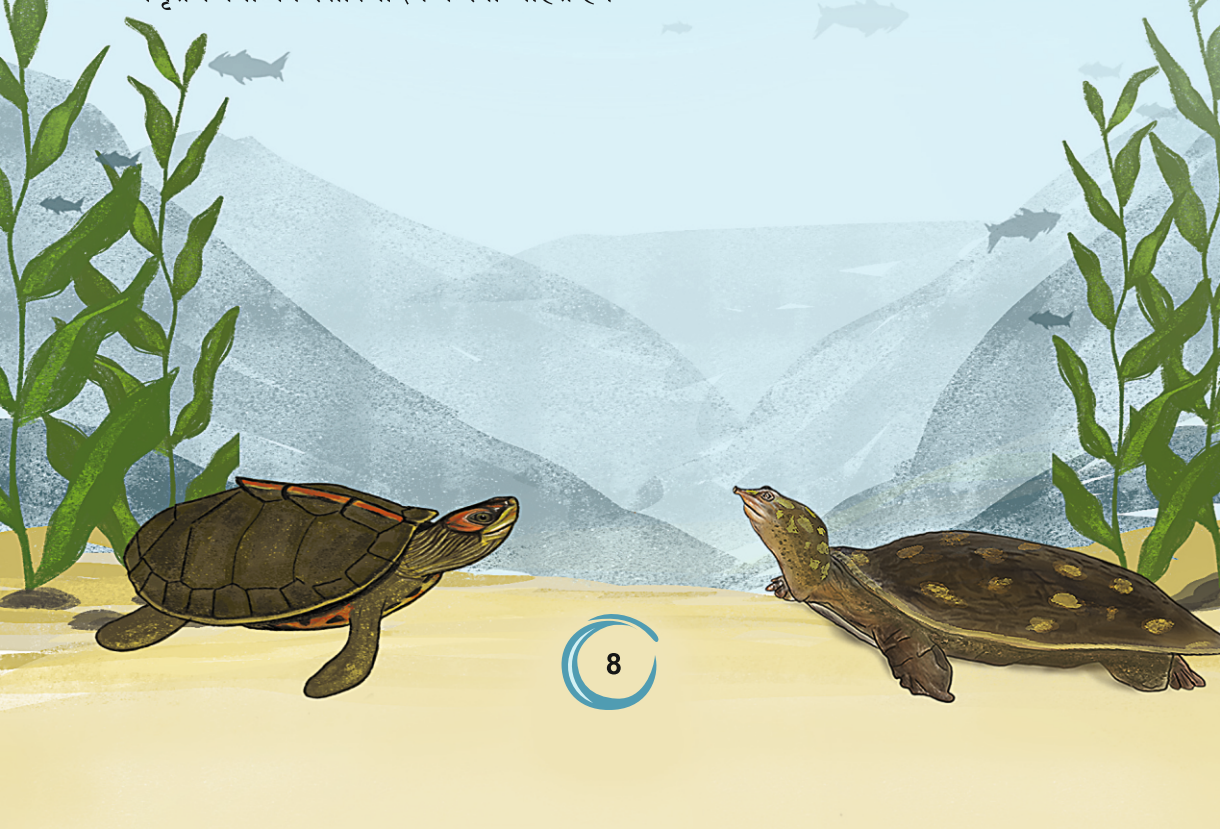

मेलानोचेलिस ट्राइजुगा– सभा में उपस्थित सज्जनों, देवियों और प्यारे बच्चों।

सुंदरी– अरे, ये तो कितनी अच्छी हिंदी बोल रहा है। मुझे लगा कि जा तो रहे हैं पता नहीं अंगरेजी वंगरेजी बोलेगा तो हम गंगा के देहाती कछुए कुछ समझ भी पायेंगे या नहीं ।

चित्रा– अरे, अब चुप भी करो! कुछ सुनाई नहीं दे रहा है बच्चों को तो लाना ही नहीं चाहिये था। बहुत शोर कर रहे हैं।

मेलानोचेलिस– आज मैं आपको अपने–आपके गौरवशाली इतिहास और पुराणों में कछुआ समुदाय की उत्पत्ति के बारे में जो बताया गया है, उसके विषय में बताउँगा। नरसिंह पुराण में कूर्मावतार को भगवान विष्णु का द्वितीय अवतार माना गया है जबकि भागवत पुराण में 11वाँ अवतार माना गया है। महाभारत के आदिपर्व में तथा पद्म पुराण के अनुसार संतति (संतान) प्राप्त करने के लिए प्रजापति कच्छप का रूप धारण कर पानी में विचरण कर रहा था। लिंग पुराण के अनुसार जब पृथ्वी रसातल को जा रही थी तो भगवान विष्णु ने कछुए का रूप धारण किया, जिसकी पीठ का घेरा एक लाख योजन था। देवराज इंद्र के विषय में तो आप सब ने सुना ही होगा। देवराज इंद्र बड़े पराक्रमी तथा वैभवशाली थे। पद्म पुराण के अनुसार देवराज इंद्र के वैभव को देख कर ऋषि दुर्वासा ने उन्हें एक पारिजात की माला भेंट की। इंद्र अपने मद में चूर था, उसने वो माला अपने हाथी एरावत को पहना दी। एरावत ने वो माला फेंक दी। माला का अपमान देख कर दुर्वासा क्रोधित हो गये और उन्होंने इंद्र को श्राप दिया कि तुम्हारा जो ये वैभव है वो नष्ट हो जायेगा। दुर्वासा ऋषि के श्राप के परिणामस्वरूप लक्ष्मी समुद्र में लुप्त हो गयी। देवराज इंद्र अपनी लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिए व्याकुल हो गये। लक्ष्मी को पुनः प्राप्त करने के लिए देवताओं तथा दैत्यों ने विष्णु भगवान से आग्रह किया विष्णु के

आदेशानुसार सभी असुरों और देवताओं ने समुद्र मंथन करने की ठानी। वासुकी नाग की डोर बनाई गयी तथा मंदराचल पर्वत की मथनी। एक ओर देवता थे और दूसरी ओर दैत्य, मंथन में सबसे पहले घातक विष निकला, जिसके प्रभाव से समस्त जगत के प्राणी व्याकुल होने लगे, जिसे शंकर भगवान ने अपने कंठ में धारण कर सृष्टि की रक्षा की। समुद्र को फिर मथा जाने लगा लेकिन मंदराचल पर्वत रसातल में धंसने लगा। भगवान विष्णु ने कछुए का रूप धारण किया और मंदराचल पर्वत को अपनी पीठ पर धारण कर लिया।

देवताओं ने समुद्र मंथन से प्राप्त चौदह रत्न तथा अमृत के साथ लक्ष्मी को प्राप्त किया और अपने खोये हुए वैभव को प्राप्त किया। तो भाइयों और बहनों ये थी पुराणों के अनुसार हम कछुआ समुदाय के उत्पत्ति की कहानी। इसके साथ ही आप लोगों के लिए ये जानना भी जरूरी है कि आप लोग पर्यावरण को स्वच्छ बनाये रखने में और पारिस्थतिकी तंत्र की मजबूती बनाये रखने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

चपन्त– महोदय! आप तो बड़े ज्ञानी हैं, कृपया बतायें कि हम कछुआ समुदाय की प्रकृति के तथा मानव समाज के प्रति क्या भूमिका है।

मेलानोचेलिस– नहीं, भाइयों ऐसा कुछ नहीं है! अपनी–अपनी जगह आप सब उतने ही

ज्ञानी और महत्वपूर्ण है। आपके ज्ञानवर्धन के लिए बताना चाहुँगा कि भारत में हम कछुओं की कुल उन्तीस प्रजाति पाई जाती हैं, जिनमें से गंगा में तेरह प्रजाति पाई जाती हैं। आप जानते ही हैं कि मनुष्यों की भाँति हम कछुए माँसाहारी भी होते हैं और शाकाहारी भी, दोनों ही नदी के पर्यावरण को स्वच्छ बनाये रखने में तथा पारिस्थितिकी तंत्र की मजबूती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जो माँसाहारी कछुए होते हैं वो मरी मछलियाँ माँस के अवशेष आदि खाते हैं, जिससे कि नदी का पर्यावरण साफ और स्वच्छ रहता है, साथ ही पारिस्थितिकी तंत्र भी स्वस्थ रहता है। इसके साथ ही मैं आज का उद्‌बोधन यहीं पर समाप्त करता हूँ। आप सभी को प्रणाम! नमस्ते।

बाटागुर– तो भाइयों! उम्मीद है कि आज के मेलानोचेलिस जी के ज्ञानवर्धक उद्‌बोधन का लाभ हम सभी कछुआ भाइयों और बहनों ने उठाया होगा। साथ ही बच्चों को जो कि भावी पीढ़ी हैं, और जिनके कंधों पर अधिक जिम्मेदारी है, उनको भी सीखने को बहुत कुछ मिला होगा। महोदय हम सभी आपके बहुत आभारी हैं। आपने हमारा आमंत्रण स्वीकार किया और हमारा ज्ञान वर्धन किया। अब सभी से मेरा अनुरोध है कि सब शांति व्यवस्था कायम रखते हुए जलपान स्थल की ओर प्रस्थान करें। धन्यवाद .....

ढोंन्डू– सभी बच्चे एक लाइन में आयें। तिलहारा भैया! आप जरा बच्चों की खाने की

व्यवस्था देख लें ये सब बहुत उधमी हैं सारी व्यवस्था बिगाड़ कर रख देंगे। चपन्त भाई आप जरा महिलाओं का ख्याल रखें।

तिलहारा- चलो बच्चों सब लाईन लगा कर खड़े हो जाओ! जो बच्चा लाईन में नहीं लगेगा उसे खाने को कुछ नहीं मिलेगा।

सारे बच्चे लाईन में लगाकर - अंकल हमने लाईन लगा ली....

तिलहारा- शाबास! बच्चों तुम्हें मालूम है ना, आने वाले सोमवार को सभी बच्चों को नदी के किनारे सफाई अभियान में चलना है। चपन्त भैया गाँव में सभी को सूचना दे देना कि सोमवार को नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत स्वच्छता अभियान है। मेरी ड्यूटी तो बच्चों के स्कूल में सूचना देने की है।

ढोंन्डू- प्रोग्राम क्या है भैया ? किस खुशी में हो रहा है, ये सब, क्या है उस दिन ?

चपन्त- तुम्हें पता नहीं है 23 मई को विश्व कछुआ दिवस है। उस दिन कछुओं के

संरक्षण के लिए भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा जागरूकता अभियान, रैली, नुक्कड़ नाटक तथा स्वच्छता अभियान चलाये जायेंगे।

ढोंन्डू– और बच्चों के लिए क्या है ?

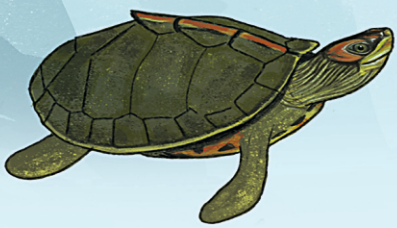

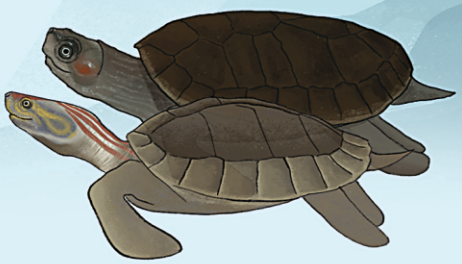

चपन्त– बच्चों के लिए पेंटिंग कॉम्पटीशन है। जो जीतेंगे उन्हें बाल गंगा प्रहरी चैम्पयिन बनाया जायेगा।

ढोंन्डू–अरे वाह! तब तो बच्चों को बहुत ही मजा आयेगा। बच्चों..... ! सबको जरूर आना है।

टीटू– अंकल ! पेंटिंग में क्या बनाना होगा ? क्या हम पहाड़, नदी, पेड़ बना सकते हैं ?

चपन्त– वैसे पेंटिंग कॉम्पटीशन में तो बायोडायवर्सिटी कंजरवेशन पर ही पेंटिंग बनानी होंगी पर डायवर्सिटी कंजरवेशन और पर्यावरण को जोड़ते हुए बना तो सकते हैं।

निलसी– अंकल–अंकल ! हमने सुना है टैटू भी बनवा सकते हैं, और फेस पेंटिंग भी।

तिलहारा– हाँ ये सब भी होगा ! तुम सब ठीक सुबह 9 बजे गंगा के किनारे आ जाना, जितना ज्यादा हो सके लोगों की प्रतिभागिता होनी चाहिये। अब सोमवार को मिलेंगे। सभी लोगों ने आज जिस प्रकार अनुशासन और व्यवस्था बनाये रखी वैसी ही उस दिन भी होनी चाहिये। कछुआ समुदाय के सम्मान की बात जो है। चलो फिर सबको नमस्ते।

टीटू– चलो–चलो आज छुट्टी का दिन है, नदी में खेलते हैं। पानी में तैरेंगे।

निलसी– हाँ–हाँ चलो। बहुत दिनों से तैरने नहीं गये। सारे दोस्तों को आवाज लगा के बुला लो।

टीटू– तुम ही बुला लो ना! वैसे तो बहुत चिल्लाती रहती हो। अभी भी चिल्ला लो।

निलसी– बुला दो ना प्लीज! मेरी आवाज कोई नहीं सुन पायेगा।

टीटू– अरे.....नानू, मन्ती, चिंकू, टोनी, गुनिया, मुनिया सब आ... जाओ हम तो जा रहे हैं नदी में खेलने..... जिसको चलना है चलो.....।

निलसी– दादी..... हम जा रहे हैं नदी में खेलने! आज देखो, कितनी सुहानी धूप निकली है। नदी में तैरने में कितना मजा आयेगा।

सुंदरी– हाँ..... वो तो ठीक है पर तुम्हें पता है ना, नदी में जाल भी लगा रहता है। कहीं उसमें फँस गये तो फिर लेने के देने पड़ जायेंगे।

खेलना तो बच्चों के लिए बहुत जरूरी है.....! किंतु जाल से जरा बच कर रहना।

टीटू– दादी, आप चिन्ता मत करो हम ध्यान रखेंगे कि जाल के पास ना जायें। अब जाने भी दो ना दादी... देर हो रही है।

निलसी– अरे चलो–चलो सब आ गये हैं। गीत भी गायेंगे, कितना मजा आयेगा।

नदियाँ के संग-संग चले जो हम तुम

साथी सब मिलकर कश्ती बनें हम

बादल के संग-संग उड़ कर चलें हम

लहरों के ऊपर बहते रहें हम

ही हा हा हा ला ला ल ला

बहते रहें हम बन कर हवा

टीटू- हवा नहीं.....बन के कछुआ! अरे ये मेरे पैरों में ये क्या उलझ रहा है? तैरने में दिक्कत हो रही है, निलसी जरा देखना ये क्या है।

निलसी- दिखाना! अरे, ये तो पॉलिथीन है। ये तुम्हारे पैरों में बुरी तरह उलझ गयी है। तुम्हें थोड़ा रूकना पड़ेगा! निकालने की कोशिश करती हूँ। तुम ऐसा करो, किनारे चल कर तुम पीठ के बल लेट जाना, मैं निकालने की कोशिश करूंगी ।

टीटू- ठीक है! किनारे पर चलते हैं। लोग भी ना..... नदियों को प्लास्टिक पॉलिथिन से भर दिया है। हमारे लिए कितनी मुसीबत हो गयी है। ओह.... मुझसे तो चला भी नहीं जा रहा है। दोस्तों, तुम खेल जारी रखो, जरा मैं इस मुसीबत से छुटकारा पा कर आता हूँ।

नानू – जाओ तुम ! हम यहीं पर हैं, तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। जल्दी आओ तुम।

टीटू– अरे ! जल्दी–जल्दी कैसे चलूं, पैरों में तो ये पॉलिथीन उलझा हुआ है। लो अब देखो।

निलसी– अरे ये तो बहुत बुरी तरह उलझा हुआ है ! रूको निकालने की कोशिश करती हूँ। ये..... लो, ये निकल गया। हे भगवान कितनी बड़ी पॉलिथीन है। लोगों को बिल्कुल अक्ल नहीं है... पूजा करके बची सामग्री पॉलिथीन में बांधकर, नदी में फेंक देते हैं।

टीटू– हाँ..... ! और ये सोचते हैं कि उन्होंने गंगा में ये सामग्री प्रवाहित करके बहुत पुण्य का काम किया है। वो नहीं जानते कि उनकी इन हरकतों से हमारा क्या हाल हो रहा है। हमें किन दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

गुनिया– निलसी... टीटू कहाँ हो तुम दोनों जल्दी आओ फिर घर भी तो जाना है। मुझे तो होमवर्क भी करना है।

निलसी– आ गये.... आ गये ! अरे टीटू के पैरों में पॉलिथीन फँस गयी थी, बड़ी मुश्किल से निकाली है। तुम सब बड़े ध्यान से पानी में तैरना, जगह–जगह कचरा फैला हुआ है। कितना गंदा हो गया है, गंगा का पानी।

गुनिया– अब किस–

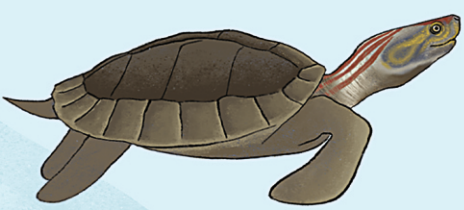

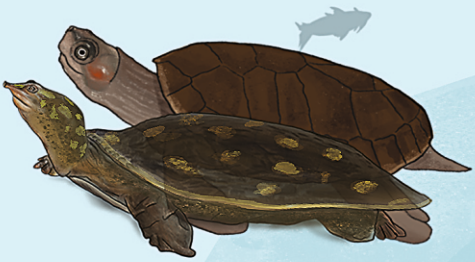

किस से बचें! कहीं पॉलिथीन कहीं मछली पकड़ने का जाल। मुसीबत ही आ गयी है। हम बच्चों के खेलने के लिए कहीं साफ-सुथरा पानी नहीं रहा। अब उस दिन बेचारे टोनी की नाक में वो प्लास्टिक की लकड़ी जैसी फँस गयी थी। कितना खून आया था उसकी नाक से.....।

टीटू- अरे उसे स्ट्रॉ कहते हैं। पता नहीं क्या-क्या इस्तेमाल करते हैं, ये इन्सान भी। हर चीज में प्लास्टिक, अपनी सुविधा के लिए हम जीवों का जीवन दूभर कर दिया है।

निलसी- और भैया उनकी धार्मिक आस्थायें तो हम पर भारी पड़ रही हैं। मुंडन करते हैं, तो बाल गंगा में, मरते हैं तो जलाने के लिए गंगा का किनारा....और तो और बचे हुए मृत शरीर, जानवरों के मृत शरीर सब गंगा में। बेचारी हमारी गंगा माँ कितना कचरा ढोयेगी ?

गुनिया- चलो! अब देर हो गयी है, घर में डाँट पड़ेगी समय से नहीं पहुँचे तो। मुझे तो पढ़ना भी है भाई।

नानू- अरे, हर समय पढ़ाई-पढ़ाई क्या कर रही है। हम नहीं पढ़ते हैं क्या ? चलो भाई! पढ़ाकी को पढ़ाई करनी है।

सुंदरी- आ गये तुम सब! चलो हाथ मुँह धोकर पढ़ने के लिए बैठो, दो घंटे पढ़ लो फिर खाना खाकर सो जाओ कल स्कूल जाना है ना! अच्छी तरह पढ़ाई करो फिर तुम्हारे लिए कुछ स्पेशल बनाया हुआ है मैंने।

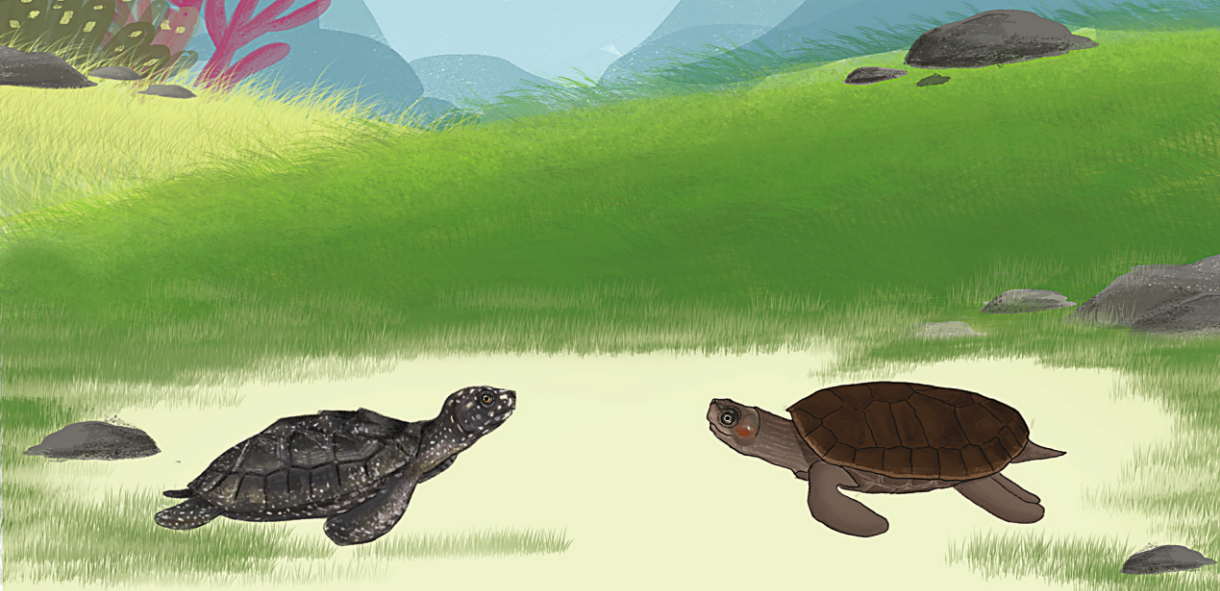

निलसी– क्या स्पेशल बना है दादी..... बताओ ना ?

सुंदरी– आज मैंने बनाया है..... मछली फ्राई और .... काई की सब्जी।

टीटू– वाह ! मेरे मुँह में तो पानी आ गया, दादी, क्या ऐसा नहीं कर सकते कि पहले खाना खा लें और पढ़ाई बाद में करें ?

सुंदरी– अरे .... नहीं पहले पढ़ाई करो। खाना खाकर नींद आने लगती है।

टीटू– दादी मुझको बहुत भूख लगी है ! मैं बहुत थक गया हूँ।

सुंदरी– ऐसा क्या करा तुमने जो थक गये हो।

निलसी– दादी आज ना ! जब हम तैर रहे थे तो टीटू के पैर में पॉलिथीन फँस गई थी। टीटू तो बेचारा तैर ही नहीं पा रहा था।

सुंदरी– अरे .... तुमने पहले क्यों नहीं बताया कहीं चोट तो नहीं आई।

निलसी– दादी पता है, मैंने बहुत मुश्किल से निकाली वो पॉलिथीन, बुरी तरह फँसी थी। पर आज हमने बहुत मजे किये, बहुत खेल किया और दादी ! अपने आप बनाकर गीत भी गाया।

सुंदरी– अरे वाह ! तुम सब तो बहुत समझदार हो गये हो। पर ज्यादा दूर तो नहीं गये ना ?

गंगा आज कल पहले जैसी सुरक्षित नहीं रही...।

टीटू– दादी ! हम बस पास ही खेलते रहे। पर गंगा सच में बड़ी गंदी हो गयी है। हर जगह प्लास्टिक, पॉलिथीन कूड़ा है।

सुंदरी– चलो, अब थोड़ी पढ़ाई कर लो। पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब .... खेलोगे कूदोगे तो..... ?

निलसी– बनोगे खराब.....

दो घंटे बाद.....

सुंदरी– आ जाओ सब बच्चे ..... खाना खाने ।

आना हमारे होटल में

चाय पियो जी गरम-गरम,

जो जी चाहे माँग लो हमसे,

सब कुछ है भगवान कसम

निलसी– हा....हा ...हा दादी ! क्या मजेदार गाना गाया आपने। चलो सब खाना खाने....।

सुंदरी– खाना खा कर सब सो जाओ। सुबह स्कूल जाना है।

सुंदरी– बच्चों उठ जाओ.....

उठ जाग मुसाफिर भोर भई

अब रैन कहाँ जो सोवत है

जो सोवत है वो खोवत है

जो जागत है वो पावत है।

टीटू– दादी ! आप बहुत कमाल के हो ! हर बात में गाना गा लेते हो।

सुंदरी– अरे बच्चों हम बूढ़ों को और कुछ तो आता नहीं बस..... जिन्दगी के अनुभव हैं।

बच्चे– दादी बाय..... हम जा रहे हैं।

गुनिया– जल्दी आओ निल्सी ! आज प्रार्थना हमें करनी है। बच्चों की लाईन लगवाओ तुम टोनी और टीटू और नानू तुम्हें याद है ! आज की प्रार्थना के बाद तुम्हें सुविचार बोलने हैं ? और अपना विषय याद है, कल सर ने क्या दिया था ?

नानू– हाँ–हाँ याद है वर्तमान में गंगा में कछुओं की स्थिति पे बोलना है। मेरी तैयारी पूरी है। चलो प्रार्थना शुरू करते हैं....

नमो गंगे तरंगे पाप हारी,

सदा जय हो सदा जय हो तुम्हारी

नानू- आदरणीय गुरूजन और मेरे प्यारे साथियों। आज के सुविचार में, मैं आपके सम्मुख गंगा में रहने वाले साथी कछुओं और उन पर जो खतरे हैं, उसके विषय में बताऊँगा।

भारत में कछुओं की कुल 29 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। जिनमें से 13 गंगा में पाई जाती हैं। गंगा में पाये जाने वाले कछुओं में कुछ शाकाहारी कछुए हैं और कुछ माँसाहारी। शाकाहारी कछुए गंगा में पाई जाने वाली वनस्पति, सड़ी फूल पत्तियाँ आदि खाते हैं और माँसाहारी कछुए छोटी मछलियाँ तथा कीड़े मकोड़े तथा मृत जानवरों के शरीर सड़ा गला माँस आदि खाते हैं। गंगा को स्वच्छ बनाये रखने तथा पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत बनाये रखने में दोनों ही प्रजातियाँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं। आज के बदलते पर्यावरण, गंगा में बढ़ते प्रदूषण तथा कछुओं के वास स्थलों में मानवीय हस्तक्षेप के कारण कछुआ समुदाय की प्रजातियाँ संकटग्रस्त हैं। कुछ प्रजातियाँ विलुप्त होने की कगार पर हैं। इसके साथ ही मैं अपनी बात यहीं समाप्त करता हूँ। जय हिंद ...

कचुगा मास्टर जी- बच्चों! आज के सुविचार में आप लोगों को गंगा में रहने वाले कछुओं के बारे संक्षिप्त एवं ज्ञानवर्धक जानकारी, बहुत ही सुंदर शब्दों में नानू द्वारा दी गयी। इसी से सम्बंधित विषय में आने वाले सोमवार को गंगा नदी के किनारे विश्व

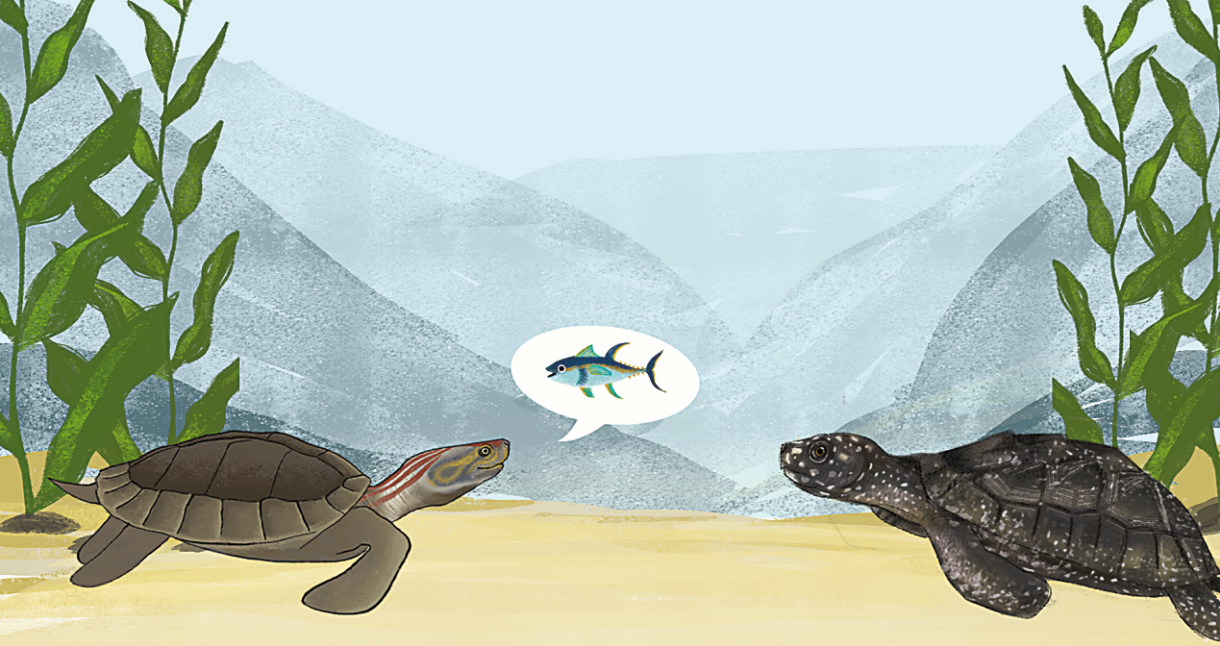

कछुआ दिवस पर भारतीय वन्यजीव संस्थान और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन एक प्रोग्राम करवा रहा है। सभी विद्यार्थियों का वहाँ उपस्थित रहना अनिवार्य है। सब लोग नदी के किनारे उपस्थित हों। अब सभी बच्चे अपने-अपने क्लास रूम में जायें।

निलसी- अरे! सोमवार तो परसों ही है। जाना तो जरूर है भाई हमारे कछुआ समाज को संरक्षित रखने की बात जो है। चलो अब सब क्लास में चलते हैं।

छुट्टी के बाद .....

चित्रा- आ गये स्कूल से ... ? क्या पढ़ा आज तुमने स्कूल में.....मुझे भी तो बताओ ..., अब तुम बच्चे स्कूल से आ कर हम बूढ़ों को पढ़ाया करो। हम भी कुछ ज्ञान प्राप्त कर लें तुम सब की कृपा से। तुम सब ऐसा करो शाम को हमारी क्लास लगाया करो और जो तुमको पढ़ाते हैं, शाम को हमें पढ़ाया करो इस बहाने तुम्हारा अभ्यास भी हो जायेगा।

गुनिया- पर नानी! आपको पहले अक्षर ज्ञान तो करवाना पड़ेगा ना? पहले शब्दों को पहचानना तो सीखना पड़ेगा ।

चित्रा- तुम सिखाओगे तो हम सब..... सीख जायेंगे तुम्हारी नानी जो हैं.... ।

टीटू- हाँ..... नानी! हम सब को शाम की कक्षा में पढ़ाई करवायेंगे। कितना मजा

आयेगा। हम भी टीचर बन जायेंगे। और हमारा रिवीजन भी हो जायेगा।

चित्रा– तो चलो फिर अब तुम सब हम दादी नानियों को पढ़ाओगे! ये काम, कल शाम से शुरू करते हैं।

टीटू– कल से क्यों दादी! आज से ही शुरू करते है। नेक काम में देरी कैसी?

निलसी– अरे आज नहीं! कल से ही! सब को बताना भी तो होगा कि कौन–कौन शामिल होना चाहते हैं, पढ़ाई करने के लिए।

गुनिया– और कल कछुआ दिवस भी तो है। उसकी सूचना भी देनी होगी सब को ।

टीटू– सूचना देने की जिम्मेदारी तो तिलहारा चाचा की है ना? उन्होंने ही सूचना देनी है सब लोगों को परसों तो ये ही तय हुआ था।

चित्रा– हाँ भाई! पहले ये कार्यक्रम निपटा लेते हैं। इसमें सब की भागीदारी जरूरी है। और फिर ये हम सब कछुआ समुदाय के भविष्य का सवाल है।

गुनिया– कछुआ समुदाय के भविष्य का ...? वो कैसे ?

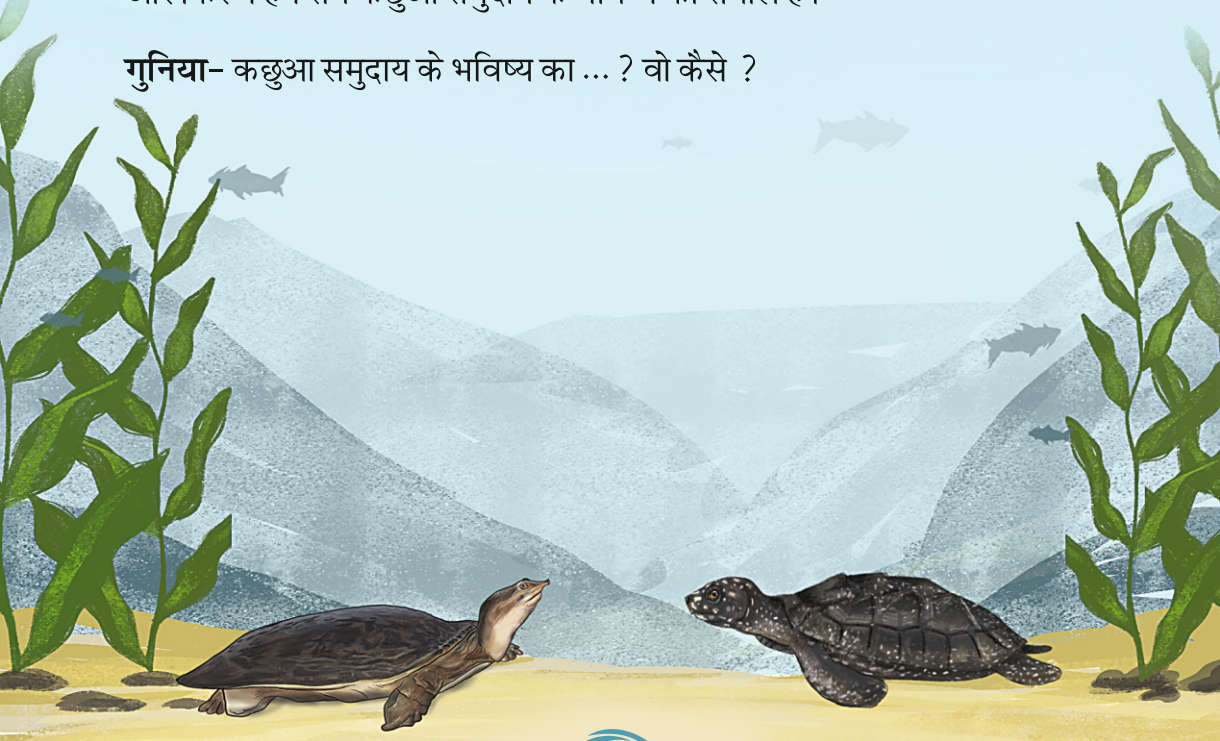

चित्रा– अब कल सब आ तो रहे हो कार्यक्रम में वहाँ आ कर सब समझ आ जायेगा। कछुआ दिवस जो है।

टीटू– चलो! ढोंन्डू चाचा से मिल कर पूछते हैं कि सब को सूचना मिल गई है क्या? वरना हम बच्चे घर–घर जा कर बता देते हैं।

निलसी– अरे भाई! हम बच्चों को भी तो कुछ करना होगा अपनी तरफ से ... हमने तो कोई तैयारी ही नहीं की। क्यों ना हम सब बच्चे मिल कर कोई गीत तैयार करते हैं।

टीटू– बच्चों को क्विज में भागीदारी करनी है। चलो! सब उसकी तैयारी करते हैं।

गुनिया– पहले ढोंन्डू चाचा से पूछ लेते हैं कि बच्चों की क्या जिम्मेदारी होगी। ढोंन्डू चाचा बताओ ना ... हम ने क्या करना है?

ढोंन्डू– रूको! तुम सब, मैं पूछ कर बताता हूँ। सब कछुआ भाइयों को सूचित कर दिया है क्या तिलहारा भाई?

तिलहारा– हाँ भईया, सबको सूचित कर दिया गया है। बच्चों के स्कूल में भी सूचना दे दी गयी है। मेरे को तो यही जिम्मेदारी दी गई थी। बाकी की जिम्मेदारियाँ और कछुओं को दी गई हैं। टैंट और चेयर का इंतजाम पचौरिया भैया को दिया गया है। जलपान की जिम्मेदारी

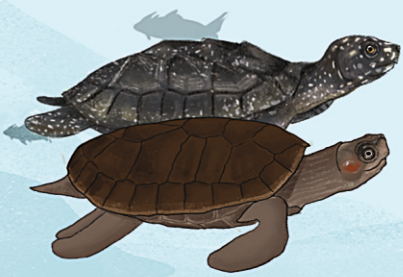

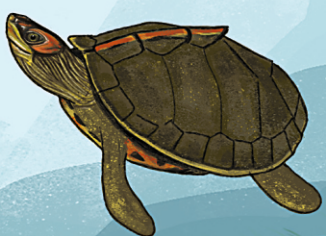

चपंत को और शांति व्यवस्था की जिम्मेदारी बाटागुर की है। बाकी बच्चों की जिम्मेदारी तो टीचर्स की ही होगी। महिलाओं को लाने की जिम्मेदारी चित्रा मौसी और सुंदरी ताई की है।

ढोंन्डू- ठीक है! बस इंतजाम कर्ता ठीक सुबह सात बजे मैदान में पहुँच जायें। प्रोग्राम की शुरूआत स्वच्छता अभियान से की जायेगी।

सोमवार .....

तिलहारा- जल्दी चलो भईया।

ढोंन्डू- भईया! एक राउंड मैं पहले ही लगा कर आ गया सब ठीक चल रहा है। सारे इंतजाम हो चुके हैं। स्कूल के बच्चे आने ही वाले हैं। चपंत भैया माइक सम्भाल रहे हैं। वो अच्छी एंकरिंग कर लेते हैं।

चपंत- हैलो-हैलो! सभा में उपस्थित सभी कछुआ भाई बहन तथा प्यारे छोटे बच्चों, सब लोग अपना स्थान ग्रहण करें और शांति व्यवस्था बनाये रखने में अपना सहयोग दें। बच्चे आगे दरी में बैठ जायें। थोड़ी देर में हमारे मुख्य वक्ता श्री थूरजी महोदय अपना वक्तव्य देंगे। कार्यक्रम की शुरूआत बच्चों के गीत से होगी, गीत के माध्यम से संदेश दिया जा रहा है कि हम कछुआ समुदाय गंगा की जैवविविधता को बनाये रखने में कितना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। आप सभी से अनुरोध है कि स्वच्छता अभियान में सभी कछुए भाई, बहन और नदी का भविष्य प्यारे कछुआ, बच्चे भागीदारी करके अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

तो ये लीजिये प्रस्तुत है ..हमारे प्यारे बच्चों द्वारा तैयार किया गया गीत -

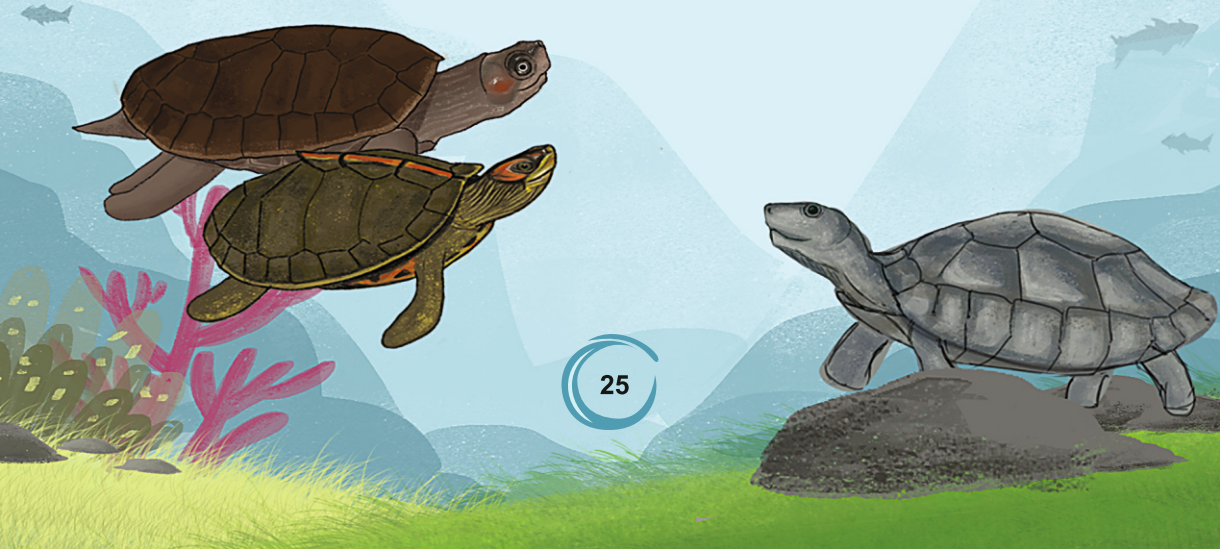

हम हैं कछुए मेहनतकश

गंगा के हम ही हैं रक्षक

रात हो या हो दिन काम करें

चलते रहें और कभी ना थकें

हमको है गंगा सबसे प्यारी

इसमें बसी है जान हमारी

आओ सब मिलकर खायें ये कसम

स्वच्छ करेंगे गंगा को हम तुम

चपंत– उपस्थित सज्जनों! बच्चों के इस सुंदर गीत के माध्यम से जो स्वच्छता का संदेश दिया गया है, हमें उस पर गौर फरमाना होगा। आइये, सुनते हैं थूरजी महोदय के विचार ...

थूरजी– सभा में उपस्थित सभी कछुआ भाइयों, बहनों को मेरा प्रणाम तथा प्यारे छोटे बच्चों! आज मैं आपको गंगा के पर्यावरण तथा जैवविविधता को बनाये रखने में हम सबका क्या योगदान है, इसके विषय में बताना चाहुँगा। जैसा कि आप सब पहले से ही जानते हैं कि गंगा नदी में भारत के कुल कछुआ प्रजातियों में से तेरह प्रजातियाँ गंगा में ही पाई जाती हैं। आपके संज्ञान में लाना चाहुँगा कि हम कछुओं की आधी से अधिक आबादी संकटग्रस्त है। जिसका मुख्य कारण है बढ़ता मानवीय हस्तक्षेप, अवैध शिकार,

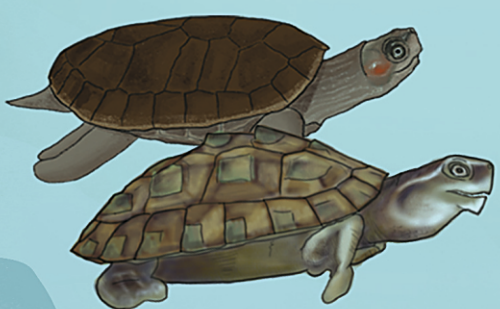

निवास स्थानों का हास।

आप सबको तो पता ही होगा कि हममें से कुछ भाई बहन शाकाहारी होते हैं और कुछ माँसाहारी। नदी के पर्यावरण, स्वच्छता और जैवविविधता को बनाये रखने में हमारी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। ये सारी बातें तो आपको पूर्व में भी बताई जा चुकी हैं! क्या आप जानते हैं कि वर्तमान में बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के कारण हमारी धरती का स्वास्थ्य खराब हो चुका है। जिसका प्रभाव हमारी गंगा और गंगा की अन्य सहायक नदियों पर भी पड़ रहा है। गंगा की जैवविविधता प्रभावित हो रही है, और इसमें रहने वाले जलीय जीव भी इससे अछूते नहीं है। हमारे बहुत से कछुआ भाई विलुप्त प्रायः प्रजातियों में आ चुके हैं। आप सबके संज्ञान में लाना चाहुँगा कि भारतीय वन्य जीव संस्थान द्वारा इस ओर एक पहल की गई है। भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम नमामि गंगे के अंतर्गत भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा गंगा में रहने वाले जलीय जीवों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सारनाथ में एक कछुआ रैस्क्यू सैंटर की स्थापना की गई है। आप लोगों को ये जानकर हर्ष होगा कि अब हम में से किसी कछुआ भाई को घायलावस्था में बीमार पड़ कर मरना नहीं पड़ेगा। वहाँ पर इलाज की पूरी व्यवस्था है, इलाज करने के पश्चात हमें अपने घर वापिस छोड़ दिया जाता है। अभी कुछ दिन पूर्व हमारा बिरादर भाई ढोंन्डू जाल में फँस गया था। भारतीय वन्यजीव संस्थान के नेतृत्वकारी समूह गंगा प्रहरियों ने उसे सारनाथ के अस्पताल में भर्ती करवाया, अब वो वहाँ से स्वास्थ्य लाभ कर वापिस गंगा में आ चुका है। सारनाथ अस्पताल में उसका अनुभव काफी अच्छा रहा।

भाइयों आप सबसे अनुरोध है कि गंगा सफाई अभियान में बढ़ चढ़कर भागीदारी करें। वैसे तो आप लोग गंगा के बिना वेतन के सफाईकर्मी हैं। दिन रात मेहनत कर के गंगा को

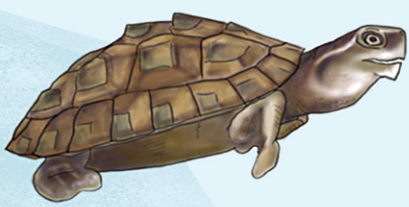

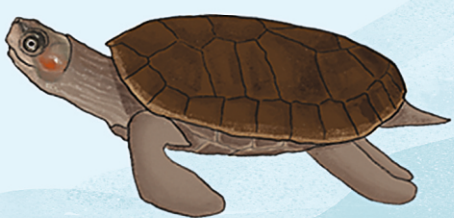

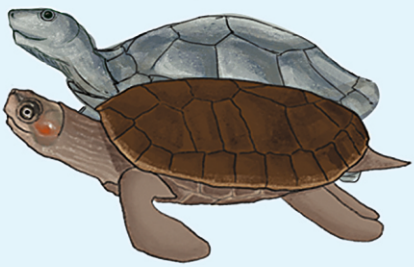

साफ करते हैं। फिर भी, कर्तव्य का निर्वहन तो करना ही पड़ेगा, स्वच्छता अभियान में भागीदारी जो करनी है। चलिए, हम सब गंगा स्वच्छता के लिए शपथ लें। आप सब मेरे साथ शपथ लेंगे।

हम कछुआ समुदाय ये शपथ लेते हैं कि,

हम अपने जीवनकाल में

गंगा की स्वच्छता बनाये रखने के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे !

जय हिंद।

ढोंन्डू- चलिए, अब नदी में चल कर सफाई करें। जिन बच्चों को पेंटिंग कॉम्पटीशन में भागीदारी करनी हैं, वो अपने टीचर्स के साथ दायीं तरफ के टेंट में बैठ जायें। महिलायें अपनी टीम के साथ गंगा में बहाये गये फूलों को एकत्रित कर एक जगह ढ़ेर लगा लें, उनमें से जो फूल ज्यादा सड़ गये हैं, उनको अलग कर लें और थोड़ा ठीक फूलों को अलग कर लें।

चपंत- फूलों की इस छंटनी से क्या होगा भईया ? उन फूलों का इस्तेमाल किस चीज के लिए किया जायेगा ?

ढोंन्डू- थोड़ा ठीक-ठाक फूलों का इस्तेमाल अगरबत्ती बनाने के लिए और सड़े हुए फूलों का जैविक खाद बनाने के लिए इस्तेमाल किया जायेगा।

चपंत– अरे वाह! ये तो बहुत ही बढ़िया उपयोग है, इस प्रकार के कचरे का।

ढोंन्डू– पुरूष गंगा के अंदर की सफाई की जिम्मेदारी लेंगे। चलिए फिर काम शुरू किया जाये।

तिलहारा– भैया माँस मछलियाँ और फूल पत्तियाँ तो हम साफ कर ही लेंगे पर जो पॉलिथीन प्लास्टिक आदि है उसका क्या करें ? सबसे बड़ी मुसीबत तो वही है। गंगा के प्रदूषण का ये भी तो एक बहुत बड़ा कारण है! इसके कारण भी तो हम जलीय जीवों को खतरा है।

चपंत– हाँ भाई, इस प्लास्टिक कचरे ने तो नाक में दम ही कर रखा है, लगता है एक दिन इससे पूरी धरती, समुद्र, नदियाँ, पहाड़ सब ढक जायेंगे। इसका जल्दी ही उपचार किया जाना आवश्यक है, ये पर्यावरण प्रदूषण का एक बहुत बड़ा कारक है।

ढोंन्डू– आप लोगों की जानकारी के लिए ये बता दूं कि भारतीय वन्यजीव संस्थान गंगा के किनारे रहने वाले समुदाय में से युवाओं के समूह बना रहे हैं। जिनको कई कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षणों के माध्यम से नेतृत्वकारी समूह के रूप में तैयार किया जा रहा है। जो कि जैवविविधता एवं जलीय जीवों के संरक्षण तथा लोगों को जागरूक करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

चपंत– ये तो बहुत ही अच्छी पहल है, इससे लोगों में जलीय जीवों के प्रति जागरूकता तो बढ़ेगी ही, साथ ही युवाओं का कौशल विकास भी होगा, ये जानकारियाँ उनके लिए रोजगार का माध्यम भी बन सकती हैं।

ढोंन्डू– मैंने तो सुना है कि गंगा प्रहरियों की ही तरह बाल गंगा प्रहरी भी बनाये जा रहे हैं और बच्चे इसके लिए खुद से पहल कर रहे हैं।

चपंत– हाँ! बच्चों को जोड़ने का उद्देश्य है कि बच्चों को अभी से ही जैवविधता संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण, जल का महत्व, प्रकृति को नुकसान पहुँचाने वाले कारकों के प्रति संवेदनशील हो सकें, तथा प्लास्टिक पॉलिथीन के इस्तेमाल के प्रति जागरूक बन सकें।

तिलहारा– हम कछुओं का तो वैसे भी गंगा को साफ रखने तथा जैवविविधता बनाये रखने में बहुत बड़ा योगदान है। बस मनुष्य ये समझ जायें कि जलीय जीव नदी के लिए क्यों आवश्यक हैं।

ढोंन्डू– हाँ! जब तक मनुष्य को ये सब समझ में नहीं आयेगा तब तक ये सब सम्भव नहीं है। हम सब एक सूत्र से बंधे हैं। पारिस्थतिकी तंत्र की मजबूती बनाये रखने में सारे प्राणी जगत की एक अहम् भूमिका है।

चित्रा– लो, फूलों की छँटनी तो हो गई। अब इनको सुखा कर पाउडर बना कर अगरबत्ती बनाने का काम करना है। सड़े फूल अलग कर दिये हैं।

सुंदरी– पर अगरबत्ती बनानी सिखायेगा कौन।

चित्रा– मौसी! चिंता मत करो सब इंतजाम हैं। भारतीय वन्यजीव संस्थान इसके लिए प्रशिक्षण का आयोजन करेगा।

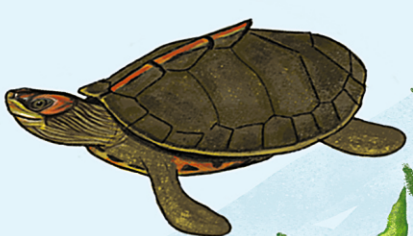

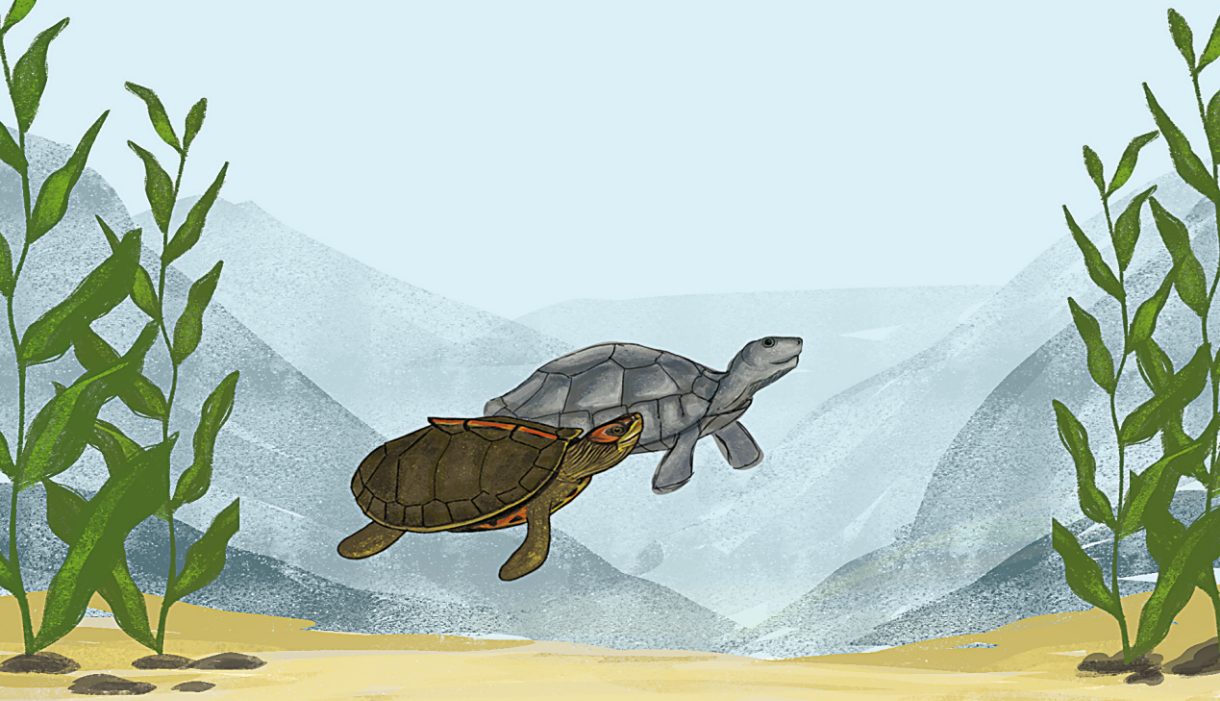

टीटू– तिलहारा चाचा! हम सबने बना ली पेंटिंग। देखो सारे बच्चों ने कितनी सुंदर पेंटिंग बनाई हैं। अब कौन इसका फैसला करेगा कि कौन सी पेंटिंग सबसे अच्छी है?

तिलहारा– चिंता मत करो बच्चों इसके लिए हमारे जज हैं। और किसी बच्चे को निराश नहीं होना पड़ेगा क्योंकि सबके लिए सांत्वना पुरस्कार जो हैं।

सारे बच्चे– हुर्रे ..... हम सबको ईनाम मिलेगा।

निलसी– देखो हमारे कितने सुंदर टैटू बने हैं। किसी ने तो अपने फेस पर ही बनाये हुए हैं। बड़ा मजा आ रहा है। है ना टीटू?

ढोंन्डू– बच्चों कार्यक्रम का समापन होने वाला है, सारे बच्चे अपनी ड्राइंग शीट जमा कर दो। रिजल्ट आपको दो तीन दिन में पता चल जायेगा। और पुरस्कार, अगला जो भी महत्वपूर्ण दिवस आयेगा उस दिन सार्टिफिकेट के साथ वितरित किया जायेगा। चलो अब सब सामुहिक गीत गाने के लिए मैदान में चलो।

बच्चे– चलो–चलो सब मैदान की ओर चलो।

आओ सब मिल कर गीत गायें.....

गंगा के रक्षक गंगा के हितैषी
हम हैं जी कछुए गंगा के निवासी
गंगा है हमको जान से ज्यादा प्यारी
धरती भी हमको है उतनी ही दुलारी
जैवविविधता बचाने की चुनौती बड़ी हैं
पारिस्थितिकी तंत्र की हम एक मजबूत कड़ी हैं
आओ हम मिलकर सब गीत ये गाऐं
गंगा की स्वच्छता का बीड़ा उठायें
जीव गर बचेंगे तो धरती भी बचेगी
जैवविविधता भी तब ही सुरक्षित रहेगी
पारिस्थितिकी तंत्र भी मजबूत रहेगा
देखो जो गर हमारा वजूद बचेगा
हम आज मिलकर आज कसम सब ये खायें
धरती का कर्ज हम सब मिलकर चुकायें।

आओ ज्ञानी बनें :

आओ बच्चों, आज हम गंगा में रहने वाले कछुओं के प्रति जानकार बनें। क्या तुम जानते हो? कि भारत में कछुओं की कुल 29 प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से 13 हमारी गंगा में पाई जाती हैं। ये कछुए भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 में सूचिबद्ध हैं। मालूम है? कछुए जल तंत्र के गिद्ध होते हैं। जिस प्रकार गिद्ध हमारी पृथ्वी के बिना वेतन के कर्मचारी होते हैं और मृत पशु, पक्षी सड़ा गला माँस खाकर पृथ्वी की स्वच्छता में भागीदारी करते हैं, उसी प्रकार कछुए भी मृत प्राणी रोगग्रस्त मछलियों सड़े फूल पत्ती आदि को खाकर जलीय पर्यावरण को साफ रखते हैं। कछुओं की आबादी में कमी के मुख्य कारण इनके निवास स्थलों को नुकसान, अण्डों का संग्रह, नदी तट में खेती और खनन, अत्यधिक शिकार और प्रदूषित जल है।

आज हम आपको गंगा में रहने वाले कछुओं का परिचय देने जा रहे हैं। ताकि आप सबकी अपनी गंगा में रहने वाले कछुओं के विषय में जानकारी बढ़ सके और आप सब भी अपने इन प्यारे दोस्तों से परिचित हो सकें।

बटागुरढोंगोका
(ढोन्ड)

यह कठोर खोल वाला कछुआ गंगा नदी के मध्य और ऊपरी हिस्सों में पाया जाता है। इसकी पीठ (केरापेस) भूरे रंग, अंडाकार एवं उभरी हुई होती है, जिसमें तीन काले रंग की धारियाँ होती हैं। यह नदियों में पाये जाते हैं। यह मार्च से अप्रैल महीने में रेतीले नदी तट और टापुओं में अंडे देते हैं। नर सर्वहारी होते है, वासस्थल में परिवर्तन, नदी के जलस्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके लिए मुख्य खतरे होते हैं।

चपन्त कछुआ
(पंगशुरा स्मीथी)

यह गंगा के ऊपरी और मध्य हिस्सों में पाये जाने वाले कठोर खोल के कछुए हैं। इसकी पीठ (केरापेस) भूरे और पीले रंग की होती है। यह सर्वहारी होते हैं जो कि जलीय पौधों एवं मछलियों को खाते हैं। यह बड़ी नदियों में जहाँ जलीय पौधों की तादाद ज्यादा होती है वहाँ पाये जाते हैं। निवास स्थानों का नुकसान, अवैध शिकार एवं व्यापार इनके मुख्य खतरे हैं।

लाल सिर कछुआ
(बटागुर कछुगा)

यह कठोर खोल वाला कछुआ गंगा नदी के ऊपरी, मध्य और निचले हिस्सों में पाया जाता है। इसके चौड़े पैरों का शल्क भूरा और पीले रंग का होता है। सिर के ऊपरी हिस्सों में लाल धारियाँ होती हैं। नर मादा के आकार से आधे आकार का होता है। यह स्वच्छ जल की गहरी नदी में रहते हैं और नदी के किनारे के रेतीले तट एवं टापुओं पर अण्डे देते हैं। यह शाकाहारी होते हैं तथा जलीय पौधों पर निर्भर रहते हैं। वास स्थल में परिवर्तन, नदी के जलस्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके लिए मुख्य खतरे हैं।

भारतीय काले कछुए
(मेलानोचेलस टिरिजूगा)

यह गंगा के ऊपरी और मध्य हिस्सों में पाये जाते हैं। इनका खोल कठोर होता है। इनकी पीठ (केरापेस) लंबी और काले रंग की होती है। इनका पेट काला होता है जिसमें पीले रंग की धारियाँ होती हैं। यह ज्यादातर झील, तालाब, और नदियों में पाया जाता है। यह जलीय कीड़े-मकोड़े, सड़े गले माँस और जलीय वनस्पतियों को खाते हैं। झील और तालाबों से खेती के लिए पानी निकाल लेना इनका मुख्य खतरा है।

पचौरिया
(पंगशुरा टेन्टोरिया)

यह गंगा के ऊपरी, मध्य एवं निचले हिस्सों में पाये जाने वाले कठोर आवरण के कछुए हैं। इनका सिर जैतून-भूरे रंग के सिर में, आंखों के पीछे एक लाल रंग का धब्बा होता है। इसकी पीठ (केरापेस) भूरे रंग की होती है और पेट में पीले रंग के काले धब्बे होते हैं। यह नदी, झील और तालाबों में पाये जाते हैं। मुख्य रूप से ये शाकाहारी होते हैं। इनके मुख्य खतरे निवास स्थान का विनाश, नदी के जलस्तर में परिवर्तन, अवैध शिकार एवं व्यापार तथा रेत खनन हैं।

चित्रा
(चित्रा इन्डिका)

यह नरम खोल वाले नदी के कछुए हैं। इनकी गर्दन के ऊपरी हिस्सों से पीठ (केरापस) के निचले हिस्से तक एक "वी" आकार का निशान रहता है। ये मध्य भारत में मानसून के समय प्रजनन करते हैं, और बाकी स्थानों में शुष्क मौसम में प्रजनन करते हैं। यह रेतीले नदी तट और टापुओं में एक साथ 65 से 193 अंडे देते हैं। वास स्थल में परिवर्तन, नदी के जलस्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके मुख्य खतरे हैं।

तिलहारा
(पंगशुरा टेक्टा)

यह गंगा नदी के ऊपरी, मध्य एवं निचले हिस्सों में पाया जाने वाले कठोर आवरण के कछुए हैं। इसकी पीठ (केरापेस) छतनुमा एवं तीसरी "कील" नुकीली होती है। यह नदियों में पाये जाते हैं। यह मेंढक, टैडपोल, मछली, केंचुआ, केकड़ा, जलीय कीड़े-मकोड़े तथा वनस्पतियों को खाता है। निवास स्थान का विनाश, नदी के जलस्तर में परिवर्तन अवैध शिकार, व्यापार एवं रेत खनन इनके मुख्य खतरे हैं।

काला काठ कछुआ
(बटागुर बास्का)

यह प्रजाति मुख्यतय: सुन्दरवन में पाई जाती है। इसकी पीठ (केरापेस) भूरा या काला एवं पेट (प्लेस्टौन) पीले से सफेद रंग का होता है। यह समुद्रतटीय मैनग्रूव जंगलों के खारे पानी में पाये जाते हैं, लेकिन प्रजनन के लिए मीठी जलीय नदियों में आ जाते हैं। ये ज्यादातर मैनग्रूव के पत्ते और फल खाते हैं। मादाएँ दिसम्बर से मार्च में अण्डे देती हैं। इनके मुख्य खतरे निवास स्थानों का विनाश, अवैध शिकार व व्यापार इनके मुख्य खतरे हैं।

सुंदरी
(लिसीमीस पंकटाटा)

यह गंगा नदी के ऊपरी, मध्य एवं निचले क्षेत्रों में पाये जाने वाले नरम आवरण के कछुए हैं। इनकी पीठ (केरापेस) जैतूनी रंग की एवं उसमें छोटे पीले धब्बे होते हैं। इसका पेट हल्के पीले रंग का होता है एवं पीछे के पैर एक आवरक (फ्लैप) द्वारा पूरा ढक जाता है। यह नदी के तट, जलाशयों, दलदल, तालाबों, झीलों, नहरों, धान के खेतों, और नदियों की धाराओं में रहता है। यह मेंढक, टैडपोल (मेंढक के बच्चे) मछली, केंचुआ, जलीय कीड़े मकोड़े, सड़े-गले माँस, एवं जलीय पौधों को खाता है। निवास स्थान का विनाश, नदी के जलस्तर में परिवर्तन, अवैध शिकार, व्यापार, एवं रेत खनन इनके मुख्य खतरे हैं।

काला चित्तीदार कछुआ
(जियोक्लेक्मसी हेमील्टोनी)

यह कठोर खोलवाला कछुआ गंगा नदी के ऊपरी और मध्य तथा निचले हिस्सों में पाये जाते हैं। यह काले रंग के होते हैं जिनमें पीले रंग का धब्बा और धारियां होती हैं। यह नदी, झील और तालाबों में पाये जाते हैं। यह माँसाहारी होते हैं, मुख्यतय: घोंघों और जलीय कीड़ों पर निर्भर रहते हैं। निवास स्थल में परिवर्तन नदी के जलस्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके लिए मुख्य खतरे हैं।

साल
(हरदेला थूरजी)

यह कठोर खोल वाले कछुए गंगा नदी के ऊपरी मध्य और निचले हिस्सों में पाये जाते हैं। इसकी पीठ (केरापेस) गहरे भूरे रंग की व गुम्बद जैसी होती है। इसको पेट पीला, जिसमें बड़े काले धब्बे होते हैं। इसके सिर पर चार पीले और नारंगी रंग की धारियां होती हैं। यह तालाबों, जलाशयों, तालों, नहरों,धीमी गति से बहने वाली नदियों में रहते हैं। यह हमेशा पानी में रहते हैं व पानी की घास और पौधे खाते हैं। वास स्थल में परिवर्तन, नदी के जलस्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके मुख्य खतरे हैं।

पचेरा
(निलसोनिया गेंजेटिका)

यह नरम खोल के कछुए गंगा नदी के मध्य और निचले हिस्से में पाये जाते हैं। यह कीचड़,मिट्टी, और रेतीली सतह वाली गहरी नदियों, झीलों और तालाबों में पाये जाते हैं। ये सर्व भक्षी होते हैं एवं घोंघे, मछली, मेंढक, पानी के पक्षी, जलीय कीड़े मकोड़े एवं जलीय पौधों को खाते हैं। इसके अतिरिक्त ये सड़ा गला माँस खाकर नदी को प्रदूषण मुक्त रखते हैं। वासस्थल में परिवर्तन, नदी के जलस्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके मुख्य खतरे हैं।

धुम कछुआ
(निलसोनिया गेंजेटिका)

यह नरम खोल वाले कछुए गंगा नदी के ऊपरी, मध्य, और निचले हिस्सों में पाये जाते हैं। इनका सिर बड़ा पीठ (केरापेस) अन्डाकार और जैतूनी रंग की होती है। यह कछुआ कीचड़, मिट्टी और रेतीली सतह वाली गहरी नदी, झील और तालाबों में पाये जाती हैं। यह सर्वहारी होते हैं और मछली, मेंढक, घोंघा, झींगा और जलीय पौधे खाते हैं। इसके साथ-साथ ये सड़ा माँस खाकर नदी को प्रदूषण मुक्त रखते हैं। निवास स्थान का विनाश, नदी के जलस्तर में परिवर्तन, शिकार, अवैध व्यापार एवं रेत खनन इनके मुख्य खतरे हैं।

आओ ज्ञानी बनें :

आओ बच्चों, आज हम गंगा में रहने वाले कछुओं के प्रति जानकार बनें। क्या तुम जानते हो? कि भारत में कछुओं की कुल 29 प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से 13 हमारी गंगा में पाई जाती हैं। ये कछुए भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 में सूचिबद्ध हैं। मालूम है? कछुए जल तंत्र के गिद्ध होते हैं। जिस प्रकार गिद्ध हमारी पृथ्वी के बिना वेतन के कर्मचारी होते हैं और मृत पशु, पक्षी सड़ा गला माँस खाकर पृथ्वी की स्वच्छता में भागीदारी करते हैं, उसी प्रकार कछुए भी मृत प्राणी रोगग्रस्त मछलियों सड़े फूल पत्ती आदि को खाकर जलीय पर्यावरण को साफ रखते हैं। कछुओं की आबादी में कमी के मुख्य कारण इनके निवास स्थलों को नुकसान, अण्डों का संग्रह, नदी तट में खेती और खनन, अत्यधिक शिकार और प्रदूषित जल है।

आज हम आपको गंगा में रहने वाले कछुओं का परिचय देने जा रहे हैं। ताकि आप सबकी अपनी गंगा में रहने वाले कछुओं के विषय में जानकारी बढ़ सके और आप सब भी अपने इन प्यारे दोस्तों से परिचित हो सकें।

बटागुरढोंगोका
(ढोन्ड)

यह कठोर खोल वाला कछुआ गंगा नदी के मध्य और ऊपरी हिस्सों में पाया जाता है। इसकी पीठ (केरापेस) भूरे रंग, अंडाकार एवं उभरी हुई होती है, जिसमें तीन काले रंग की धारियाँ होती हैं। यह नदियों में पाये जाते हैं। यह मार्च से अप्रैल महीने में रेतीले नदी तट और टापुओं में अंडे देते हैं। नर सर्वहारी होते है, वासस्थल में परिवर्तन, नदी के जलस्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके लिए मुख्य खतरे होते हैं।

चपन्त कछुआ
(पंगशुरा स्मीथी)

यह गंगा के ऊपरी और मध्य हिस्सों में पाये जाने वाले कठोर खोल के कछुए हैं। इसकी पीठ (केरापेस) भूरे और पीले रंग की होती है। यह सर्वहारी होते हैं जो कि जलीय पौधों एवं मछलियों को खाते हैं। यह बड़ी नदियों में जहाँ जलीय पौधों की तादाद ज्यादा होती है वहाँ पाये जाते हैं। निवास स्थानों का नुकसान, अवैध शिकार एवं व्यापार इनके मुख्य खतरे हैं।

लाल सिर कछुआ
(बटागुर कछुगा)

यह कठोर खोल वाला कछुआ गंगा नदी के ऊपरी, मध्य और निचले हिस्सों में पाया जाता है। इसके चौड़े पैरों का शल्क भूरा और पीले रंग का होता है। सिर के ऊपरी हिस्सों में लाल धारियाँ होती हैं। नर मादा के आकार से आधे आकार का होता है। यह स्वच्छ जल की गहरी नदी में रहते हैं और नदी के किनारे के रेतीले तट एवं टापुओं पर अण्डे देते हैं। यह शाकाहारी होते हैं तथा जलीय पौधों पर निर्भर रहते हैं। वास स्थल में परिवर्तन, नदी के जलस्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके लिए मुख्य खतरे हैं।

भारतीय काले कछुए
(मेलानोचेलस टिरिजूगा)

यह गंगा के ऊपरी और मध्य हिस्सों में पाये जाते हैं। इनका खोल कठोर होता है। इनकी पीठ (केरापेस) लंबी और काले रंग की होती है। इनका पेट काला होता है जिसमें पीले रंग की धारियाँ होती हैं। यह ज्यादातर झील, तालाब, और नदियों में पाया जाता है। यह जलीय कीड़े-मकोड़े, सड़े गले माँस और जलीय वनस्पतियों को खाते हैं। झील और तालाबों से खेती के लिए पानी निकाल लेना इनका मुख्य खतरा है।

पचौरिया
(पंगशुरा टेन्टोरिया)

यह गंगा के ऊपरी, मध्य एवं निचले हिस्सों में पाये जाने वाले कठोर आवरण के कछुए हैं। इनका सिर जैतून-भूरे रंग के सिर में, आंखों के पीछे एक लाल रंग का धब्बा होता है। इसकी पीठ (केरापेस) भूरे रंग की होती है और पेट में पीले रंग के काले धब्बे होते हैं। यह नदी, झील और तालाबों में पाये जाते हैं। मुख्य रूप से ये शाकाहारी होते हैं। इनके मुख्य खतरे निवास स्थान का विनाश, नदी के जलस्तर में परिवर्तन, अवैध शिकार एवं व्यापार तथा रेत खनन हैं।

चित्रा
(चित्रा इन्डिका)

यह नरम खोल वाले नदी के कछुए हैं। इनकी गर्दन के ऊपरी हिस्सों से पीठ (केरापस) के निचले हिस्से तक एक "वी" आकार का निशान रहता है। ये मध्य भारत में मानसून के समय प्रजनन करते हैं, और बाकी स्थानों में शुष्क मौसम में प्रजनन करते हैं। यह रेतीले नदी तट और टापुओं में एक साथ 65 से 193 अंडे देते हैं। वास स्थल में परिवर्तन, नदी के जलस्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके मुख्य खतरे हैं।

तिलहारा
(पंगशुरा टेक्टा)

यह गंगा नदी के ऊपरी, मध्य एवं निचले हिस्सों में पाया जाने वाले कठोर आवरण के कछुए हैं। इसकी पीठ (केरापेस) छतनुमा एवं तीसरी "कील" नुकीली होती है। यह नदियों में पाये जाते हैं। यह मेंढक, टैडपोल, मछली, केंचुआ, केकड़ा, जलीय कीड़े-मकोड़े तथा वनस्पतियों को खाता है। निवास स्थान का विनाश, नदी के जलस्तर में परिवर्तन अवैध शिकार, व्यापार एवं रेत खनन इनके मुख्य खतरे हैं।

काला काठ कछुआ
(बटागुर बास्का)

यह प्रजाति मुख्यतयः सुन्दरवन में पाई जाती है। इसकी पीठ (केरापेस) भूरा या काला एवं पेट (प्लेस्टौन) पीले से सफेद रंग का होता है। यह समुद्रतटीय मैनग्रूव जंगलों के खारे पानी में पाये जाते हैं, लेकिन प्रजनन के लिए मीठी जलीय नदियों में आ जाते हैं। ये ज्यादातर मैनग्रूव के पत्ते और फल खाते हैं। मादाएँ दिसम्बर से मार्च में अण्डे देती हैं। इनके मुख्य खतरे निवास स्थानों का विनाश, अवैध शिकार व व्यापार इनके मुख्य खतरे हैं।

सुंदरी
(लिसीमीस पंकटाटा)

यह गंगा नदी के ऊपरी, मध्य एवं निचले क्षेत्रों में पाये जाने वाले नरम आवरण के कछुए हैं। इनकी पीठ (केरापेस) जैतूनी रंग की एवं उसमें छोटे पीले धब्बे होते हैं। इसका पेट हल्के पीले रंग का होता है एवं पीछे के पैर एक आवरक (फ्लैप) द्वारा पूरा ढक जाता है। यह नदी के तट, जलाशयों, दलदल, तालाबों, झीलों, नहरों, धान के खेतों, और नदियों की धाराओं में रहता है। यह मेंढक, टैडपोल (मेंढक के बच्चे) मछली, केंचुआ, जलीय कीड़े मकोड़े,सड़े-गले मांस, एवं जलीय पौधों को खाता है। निवास स्थान का विनाश, नदी के जलस्तर में परिवर्तन, अवैध शिकार, व्यापार, एवं रेत खनन इनके मुख्य खतरे हैं।

काला चित्तीदार कछुआ
(जियोक्लेक्मसी हेमील्टोनी)

यह कठोर खोलवाला कछुआ गंगा नदी के ऊपरी और मध्य तथा निचले हिस्सों में पाये जाते हैं। यह काले रंग के होते हैं जिनमें पीले रंग का धब्बा और धारियां होती हैं। यह नदी, झील और तालाबों में पाये जाते हैं। यह मांसाहारी होते हैं, मुख्यतय: घोंघों और जलीय कीड़ों पर निर्भर रहते हैं। निवास स्थल में परिवर्तन नदी के जलस्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके लिए मुख्य खतरे हैं।

साल
(हरदेला थूरजी)

यह कठोर खोल वाले कछुए गंगा नदी के ऊपरी मध्य और निचले हिस्सों में पाये जाते हैं। इसकी पीठ (केरापेस) गहरे भूरे रंग की व गुम्बद जैसी होती है। इसको पेट पीला, जिसमें बड़े काले धब्बे होते हैं। इसके सिर पर चार पीले और नारंगी रंग की धारियां होती हैं। यह तालाबों, जलाशयों, तालों, नहरों, धीमी गति से बहने वाली नदियों में रहते हैं। यह हमेशा पानी में रहते हैं व पानी की घास और पौधे खाते हैं। वास स्थल में परिवर्तन, नदी के जलस्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके मुख्य खतरे हैं।

पचेरा
(निलसोनिया गेंजेटिका)

यह नरम खोल के कछुए गंगा नदी के मध्य और निचले हिस्से में पाये जाते हैं। यह कीचड़,मिट्टी, और रेतीली सतह वाली गहरी नदियों, झीलों और तालाबों में पाये जाते हैं। ये सर्व भक्षी होते हैं,एवं घोंघे, मछली, मेढक, पानी के पक्षी, जलीय कीड़े मकोड़े एवं जलीय पौधों को खाते हैं। इसके अतिरिक्त ये सड़ा गला मांस खा कर नदी को प्रदूषण मुक्त रखते हैं। वासस्थल में परिवर्तन, नदी के जलस्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके मुख्य खतरे हैं।

धुम कछुआ
(निलसोनिया गेंजेटिका)

यह नरम खोल वाले कछुए गंगा नदी के ऊपरी, मध्य, और निचले हिस्सों में पाये जाते हैं। इनका सिर बड़ा पीठ (केरापेस) अन्डाकार, और जैतूनी रंग की होती है। यह कछुआ कीचड़, मिट्टी और रेतीली सतह वाली गहरी नदी, झील और तालाबों में पाये जाती हैं। यह सर्वहारी होते हैं, और मछली, मेंढक, घोंघा, झींगा और जलीय पौधे खाते हैं। इसके साथ-साथ ये सड़ा मांस खाकर नदी को प्रदूषण मुक्त रखते हैं। निवास स्थान का विनाश, नदी के जलस्तर में परिवर्तन, शिकार, अवैध व्यापार एवं रेत खनन इनके मुख्य खतरे हैं।

NMCG

National Mission for Clean Ganga, Department of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti, Major Dhyan Chand Stadium,
India Gate, New Delhi - 110001

GACMC

Ganga Aqualife Conservation Monitoring Centre Wildlife Institute of India, Dehradun nmcg@wii.gov.in

Wildlife Institute Of India

Chandrabani, Dehradun - 248001,
Uttarakhand
t.: +91135 2640114-15, +91135 2646100,
f.: +91135 2640117

www.wii.gov.in/national_mission_for_clean_ganga